आंबेडकर पथ ❙ वर्ष : 1 ❙ अंक : 01 ❙ जनवरी-जून 2024 ❙ ISSN : 3048-7781

सामाजिक बराबरी की आंबेडकर-दृष्टि काव्यात्मक अनुशीलन

—प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी

प्रस्तावना

भारत में दलित सुधार आंदोलन और दलित राजनीति के सूत्रधार भले ही डॉ. भीमराव आंबेडकर को माना जाए लेकिन उनकी मृत्यु के बाद देश में जिस प्रकार दलित राजनीति ने समाजशास्त्रियों के सामने अप्रत्याशित रूप से करवट बदल ली और आंबेडकर के सपनों को हाशिए पर फेंक कर सामाजिक बराबरी पाने के दावे को सिर्फ सत्ता पाने का ज़रिया बना लिया, वह दुर्भाग्यपूर्ण है। स्वार्थपूर्ण दलित राजनीति से कुछ अवधि के लिए सत्ता तो मिली और अवधि का उपयोग बाबासाहेब के सपनों को साकार करने के लिए किया जा सकता था लेकिन दलित समुदाय की सामाजिक स्थिति यथावत बनी रही। इसीलिए आंबेडकर जैसे महान् समाज सुधारक व्यक्तित्व की, उनके विचारों के अनुपालन की आवश्यकता देश में अभी भी बनी हुई है। जातिवाद के ज़हर से अभी भी देश मुक्त नहीं हो सका है और एक ही समाज में दो धाराएं आज भी साफ-साफ बहती दिखाई दे रही है। कड़वा सच यह है कि देश के सभी नागरिकों को संविधान में प्रदत्त समानता और समान अधिकार के सिद्धांत विश्व पटल के लिए मात्र 'शो पीस' बनकर रह गए हैं। भारत में दलित अभी भी सामाजिक हाशिए पर ही हैं। समय बदल गया, सरकारें बदलती चली गईं किंतु बाबासाहेब और उनके कालजयी विचार अभी भी अपनी जगह खड़े और अड़े आज भी दलितों के प्रति सामाजिक दायित्वों की याद दिला रहे हैं।

डी-9 विज्ञानपुरी, महानगर, लखनऊ-226006
Email : darshgrandpa@gmail.com

ऋषि-मुनियों, देवी-देवताओं की धरती रही है भारतवर्ष,
हर भारतीयों को इस बात का सदा-सर्वदा रहा है हर्ष ॥
देश अब मना रहा है अपनी आज़ादी का अमृत वर्ष,
लेकिन दलित-वंचितों के बारे में अब भी शेष विमर्श ॥

चौदह अप्रैल सन् अठारह सौ इक्यानवे को महू की धरती पर,
एक ज्योतिपुंज बालक भीम ने जन्म लिया।
सामाजिक हाशिए पर सदियों से रहने की विवशता से इतर,
उन्होंने दलित समुदाय के लिए एक नया चिंतन दिया ॥

सच है कि विद्वत्ता और सम्मान किसी की थाती नहीं,
मनुष्य और मनुष्य की कोई अलग जाति नहीं।
ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, नर या नारी इनमें कोई अंतर नहीं,
विकसित समाज के लिए जरूरी सही मंत्र यही ॥

सन् उन्नीस सौ सैंतालीस की आई वह शुभ घड़ी,
भारत माँ की गुलामी की टूटी जंजीरों की कड़ी ॥
विभाजन की बात कुछ नासमझों के दिमाग पर चढ़ी,
पाकिस्तान बनाने की माँग पर एक जमात अड़ी ॥

बंटे हुए भारत की अब तस्वीर बनानी थी,
संविधान की रचना कर तकदीर बनानी थी।
भीमराव को मिला काम यह, डगर कठिन थी,
कठिन परीक्षा की घड़ी भी आ ही पड़ी थी ॥

छब्बीस नवंबर उन्नीस सौ उनचास को,
अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मरक्षित हुआ संविधान।
सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता की,
राह हो चली आसान ॥

उम्मीद जगी कि हाशिए के लोगों के दिन बहुरेंगे,
उनको संग-साथ में लेकर अब सम्मान मिलेंगे।
ऊँच-नीच का, छुआछूत का रगड़ा-झगड़ा खत्म ही होंगे,
एक देश के सभी नागरिक नेक रहेंगे ॥

लेकिन हिन्दू बहुल देश ने अपनी,
रीति न बदली नीति न बदली।
दलित वंचितों के हिस्से की,
सोच और रणनीति न बदली ॥

जूठन खाना या सड़ी लाश को घर लाना,
क्या किसी मनुज को खुशी-खुशी स्वीकार है?
नहीं-नहीं, यह दलित जाति को लघुतम कर, अपमानित करता,
बहुसंख्यक समुदाय का अतिचार है।
आंबेडकर की तल्ख सोच थी,
'मूकनायक' की यह चिंता जायज़ थी।
''अगर कोई इंसान हिंदुस्तान के कुदरती तत्त्वों,
और मानव समाज को एक दर्शक के नज़रिए से,
फिल्म की तरह देखता है तो...
तो ये मुल्क नाइंसाफी की पनाहगाह के सिवा कुछ नहीं दिखेगा।''

मानव-मानव को दूर रखे जाने की साजिश रचता,
छल, प्रवंचना से उपजा यह व्यवहार है।
बारह हजार दो सौ चौंतीस वर्ष पहले की कूटनीति,
दलित समझते
'मनुस्मृति' का उपहार है ॥

शूद्रों को विद्या से वंचित करना साजिश थी,
जाति-वर्ण संकीर्ण प्रथा भी तभी से आच्छादित थी।
सिर्फ शूद्र ही क्यों इस भेद-विभेद में, तब तो,
देश की महिलाएं भी शामिल थीं ॥

''भारत के बीमार लोग हैं हिन्दू,''
बाबासाहेब ने सच ही तो यह बात कही थी।
पढ़-लिखकर भी जब उनने घोरतम भेदभाव और,
छुआछूत की लात सही थी ॥

इस्लाम में भी ऊँचे तबके का रहा सदा बोलबाला,
चलता चला आ रहा वहाँ भी छुआछूत का रोग भयंकर।
अंधी सुरंग में रखे जाते रहे बहुसंख्यक पसमांदा,
महिला, शूद्र और पसमांदा इनमें नहीं था अंतर ॥

बाबासाहेब ने इसीलिए दलितों-वंचितों में,
पढ़ने-लिखने का अभियान चलाया था।
खुद मशाल बनकर जीने का
उन सब में मान बढ़ाया था ॥

हिन्दू धर्म की नैतिक और धार्मिक दुनिया में,
जाति वर्ण की जड़ थी बहुत ही गहरी।
इसीलिए महिमामंडित करते ग्रंथों को शायद,
सीधे खारिज करने की तब माँग थी उभरी ॥

आम दलित अब भी शोषित और वंचित हैं,
ऊँची पंगत के आगे तन-मन से कुंठित है।
आज़ादी की हुंकारों से भी आगे अब,
जाति-समाज की संरचना पर सोच जरूरी है ॥

गहन शोक का विषय दलित बच्चे को प्रवेश नहीं मिलता,
पूजा स्थल तक उन सब का थाल नहीं पहुँच सकता।
उन तक पहुँचे कि संसाधन हाँफने लगते हैं,
भोजन की पंगत में वे अलग बिठा पहचाने जाते हैं ॥

हर दो घंटों में दलित पे हमले होते हैं,
दो चार दलित हर रोज मरा ही करते हैं।
हर रोज दलित बस्ती में आग लगा करती,
नारी अस्मिता बिलख कर ही रह जाती है ॥

क्यों शर्म से झुकता नहीं माथ है हम सबका,
जब वोट डालने से वंचित होता है यह तबका?
लहरा कर अस्त्र और धमका दलित की बस्ती को,
अपहरण कर लिया जाता है जब प्रजातंत्र का ॥

सोशल इंजीनियरिंग की मिलती सौगातें हैं,
आज़ादी तो अब बीती बात हुई साथी।
अब मान सहित जीने का हक हम सब को है,
सवर्ण-दलित होंगे अब जैसे दिया-बाती ॥

सभी चिह्न जातियों के अब हटने होंगे,
देश में अब प्रतिमान नए गढ़ने होंगे।
भीमराव की सोच सामने रखकर ही,
देश से परे 'पंथ'-'ग्रंथ' रखने होंगे ॥

समानता के सपनों को तब पंख लगेंगे,
आज़ादी का घर-घर आनंद जगेंगे।
ना ऊँच-नीच का कभी, कहीं झगड़ा होगा,
आज़ादी के परचम को तब सतरंग लगेंगे ॥

सन् उन्नीस सौ बत्तीस के पूना पैक्ट में जब,
बाबासाहेब ने दलितों को अधिकार दिलाना चाहा था।
उस दौर में ही उनके विरुद्ध कुछ कट्टर हिन्दू लोगों ने,
दोहरे वोट और अलग निर्वाचन मण्डल को ले भड़काया था ॥

गर दलित दोहरे वोट डालने के अधिकारी होते,
फिर वोट की लालच में स्वतः समाज से वे सम्मानित होते।
इसमें कुछ नया नहीं था अलग से निर्वाचन मण्डल की माँग,
ऊँची जाति की सोच में समझो पड़ी थी स्वार्थ की भांग ॥

लोकतंत्र में अल्पसंख्यक अगर नहीं हैं सुरक्षित,
समानता के व्यवहारिक उपहार से गर हैं वे सब वंचित।
दबंग सांप्रदायिकता के बहुमत में दलित की बात सुनेगा कौन,
प्रजातंत्र का मूल मंत्र कैसे होगा अभिसिंचित?

अभी नहीं बन पाया है आंबेडकर के स्वप्न का भारत,
जातिवाद और छुआछूत का रोग अभी भी मारक।
इसीलिए हिन्दुत्व त्याग बाबा बुद्ध शरण में भागे,
नहीं समाहित दलित हो सके जातिवाद के आगे ॥

जातिदंश के नागपाश से मुक्त दलित सब जन हों,
सच यह है कि दलित स्वतंत्रता के मन्तव्य तभी हैं।
पूर्वाग्रह से मुक्त होकर फिर से मनन करो,
भीमराव आंबेडकर दर्शन अब भी आस बने हैं ॥

प्रेमचंद का सच ही तो है यह कहना,
क्या बिगाड़ के डर से न्याय की बात नहीं करोगे?
न्याय के लिए अब भी इंसाफ है होना,
दलित-ऊँच और नीच की गहरी—लंबी खाई, नहीं भरोगे?

संदर्भ :

भारत का राष्ट्रीय अंश (1916), भारत में जातियों और उनका मशीनीकरण (1916), भारत में लघु कृषि और उनके उपचार (1917), साप्ताहिक पत्र 'मूक नायक' (1920), बहिष्कृत भारत (1927), जनता (1930), ब्रिटिश भारत में साम्राज्यवादी वित्त का विकेन्द्रीकरण (1921), रुपए की समस्या : उद्‌भव और समाधान (1923), ब्रिटिश भारत में प्रांतीय वित्त का अभ्युदय (1925), जाति का विनाश (1936), संघ बनाम स्वतंत्रता (1939), पाकिस्तान पर विचार (1940), श्री गांधी और अछूतों की विमुक्ति (1942), रानादे, गांधी और जिन्ना (1943), कांग्रेस और गांधी ने अछूतों के लिए क्या किया (1945), शूद्र कौन और कैसे (1948), महाराष्ट्र भाषाई प्रांत (1948), भगवान बुद्ध और उनका धर्म (1957)।